स्किलमेंट कविताएँ और कहानियाँ – एफ एस 3 (यू के जी)

PMP Editorial Team

© 2022 *सर्वाधिकार पी.एम. पब्लिशर्स प्रा.लि.*

इस पुस्तक की विषयवस्तु, लेख, चित्र, पोस्टर आदि प्लैनिट मल्टिमीडिया पब्लिशर्स की संपत्ति है और इनका सर्वाधिकार प्रकाशक को सुरक्षित है। प्रकाशक की अनुमति के बिना पुस्तक के किसी भाग का पूर्णतः या अंशतः प्रकाशन, छायाप्रति, अनुवाद या किसी अन्य विधि से इसका उपयोग सर्वथा प्रतिबंधित है।

आइ.एस.बी.एन. : 978-93-94820-46-3

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹171/-

मुद्रक :

प्रकाशित द्वारा

PMP Planet® Multimedia Publishers
The Ultimate Resource

पी.एम. पब्लिशर्स प्रा. लि.

सी–55, सेक्टर–65, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर – 201301, (यू.पी.), इण्डिया
फोन. न.: 0120–4300130–33, मो. न.: 9540990177
ईमेल: **info@pmpublishers.in**
वेब: **www.pmpublishers.in**

विषय सूची

1.	सूरज	3
2.	मेरी गुड़िया	4
3.	छुक–छुक रेलगाड़ी	5
4.	कर्म ही सुंदर है (कहानी)	6
5.	क्रिया कलाप–1	7
6.	प्रार्थना	8
7.	विनती	9
8.	टिक–टिक–टिक	10
9.	सच्चाई नहीं छिपानी चाहिए (कहानी)	11
10.	क्रिया कलाप–2	12
11.	मोर–मोरनी	13
12.	सूर्य	14
13.	तोता आया	15
14.	मूर्ख कछुआ (कहानी)	16–17
15.	क्रिया कलाप–3	18
16.	मैं तो सो रही थी	19
17.	नन्हीं–सी मुन्नी	20
18.	चंदा मामा	21
19.	चालाक गीदड़ (कहानी)	22–23
20.	क्रिया कलाप–4	24

सूरज

सिर पर सूरज नीचे घास
आओ मिलकर नाचें आज
एक पेड़ है लम्बा सा
फिर भी मुझसे छोटा सा
आसमान में दो कौवे
रंग है उनका नीला सा
भूरे जूते भूरे बाल
शर्ट सफेद धारियाँ लाल
हरी घास और पीला सूरज
दिन को करता कैसा जगमग
हँसो हँसाओ आओ पास
सिर पर सूरज नीचे घास

मेरी गुड़िया

मेरी गुड़िया, मेरी गुड़िया।
हँसी खुशी की है ये पुड़िया।।
मैं इसको कपड़े पहनाती।
इसको अपने साथ सुलाती।।
ये है मेरी सखी सहेली।
नहीं छोड़ती मुझे अकेली।।
ना ये ज्यादा बात बनाए।
मेरी बात सुनती जाए।।
गाना इसको रोज सुनाती।
लेकिन खाना ये नहीं खाती।।

PM Publishers. Pvt. Ltd.

छुक–छुक रेलगाड़ी

गाड़ी कहती छुक–छुक–छुक,
धुआँ उड़ाती फुक–फुक–फुक।
इंजन जाए आगे–आगे,
पीछे–पीछे डिब्बे भागे।
सुरंग के भीतर जब ये जाएं,
दिन को भी ये रात बनाए।
छुक–छुक करती गाती जाती,
सीटी भी यह खूब बजाती।।

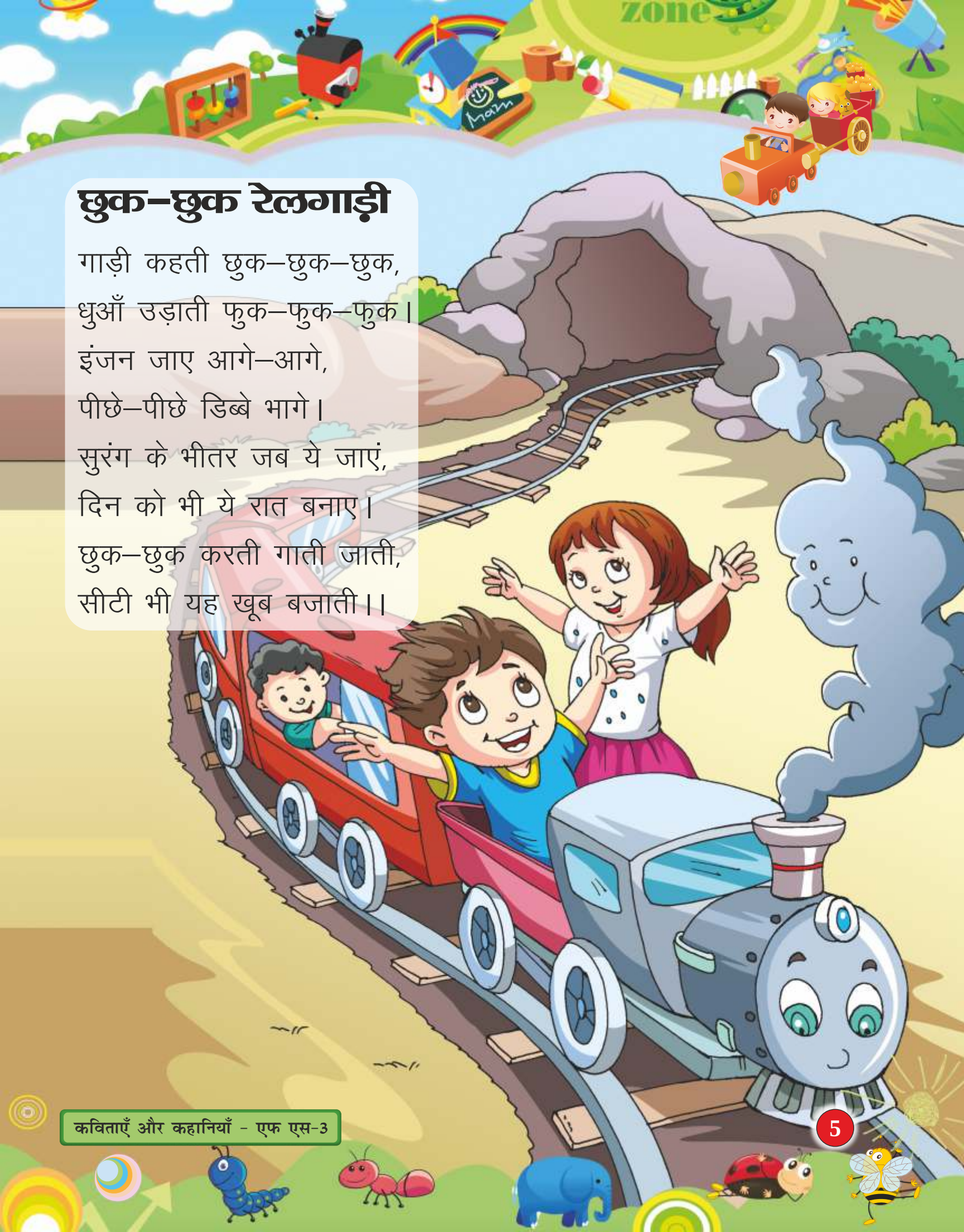

कर्म ही सुंदर है

एक जंगल में एक बारहसिंघा रहता था। वह अकसर एक तालाब के पास जाया करता था और पानी में अपनी परछाईं देखकर अपने आपसे कहता, ''मेरे सींग कितने सुंदर हैं! काश मेरे पैर भी इतने ही सुंदर होते!''

एक दिन एक शेर ने उसका पीछा किया। बारहसिंघा घने जंगल की ओर भागा, लेकिन उसके सींग एक घनी झाड़ी में फँस गए। उसे लगा कि उसकी मौत अब पास आ चुकी है। वह अपने सींगों को कोसने लगा।

आखिरकार, उसने अपने मजबूत पैरों की सहायता से अपने आपको झाड़ी से मुक्त करा लिया। इसके बाद वह अपने मजबूत पैरों से उछलता–कूदता जंगल में भाग गया और शेर से बचने में सफल हो गया।

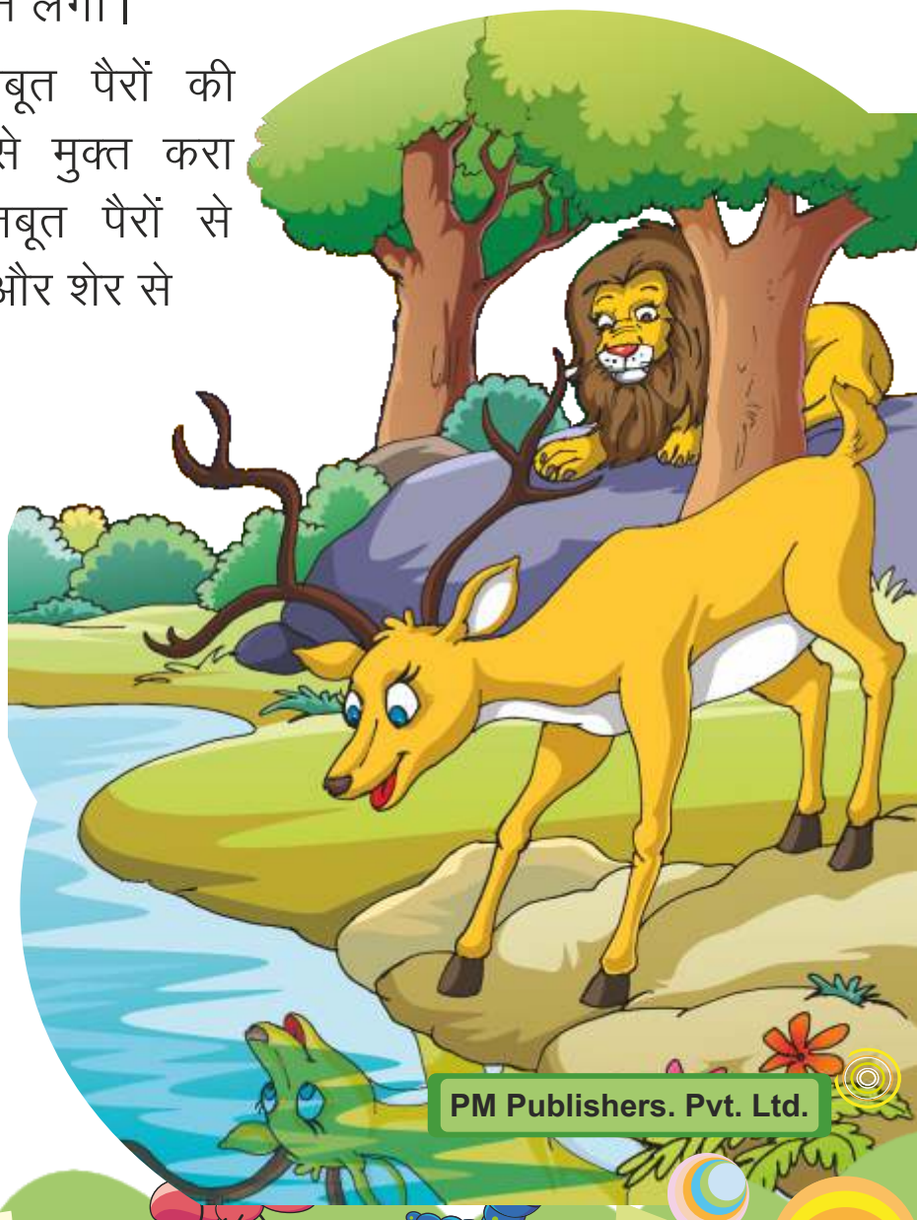

बारहसिंघा ने अपने कुरूप पैरों को उसकी जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया, जबकि उसके सुंदर सींगों की वजह से तो उसकी जान ही जाने वाली थी। वह सोचने लगा कि उसे संकट से बचने के लिए सींगों के बजाए पैरों की अधिक आवश्यकता है। उसके बाद से उसने अपने पैरों को कभी कुरूप नहीं माना। सही कहा गया है कि सुंदरता रूप में नहीं कर्म में है।

PM Publishers. Pvt. Ltd.

क्रिया कलाप-1

नीचे दिए गए बिन्दुओं को जोड़कर चित्र पूरा करें और रंग भरें।

प्रार्थना

छोटे बच्चे हम नादान,
पूजा करते हैं भगवान।
फूल हमारे तुम रख लेना,
हमको सद्‌बुद्धि दे देना।
हमें बड़ा जल्दी कर देना,
पढ़ लिखकर हम बनें महान।
आएँ अपने देश के काम,
हे भगवान, हे भगवान।।

PM Publishers. Pvt. Ltd.

विनती

विनती करते हैं भगवान,
हम सब बालक निपट अंजान।
तुमने सारा जगत बनाया,
तारों–भरा आकाश सजाया।
तुमने सूरज चाँद बनाया,
काला–काला मेघ बनाया।
तुमने फूलों को महकाया,
तुमने पवन व नीर बनाया।
तुम जग के पालक भगवान्,
हम सब बालक निपट अंजान।
विनती करते दया निधान,
ऊँची करें देश की शान।।

टिक–टिक–टिक

घड़ी है करती टिक–टिक–टिक,
गाड़ी चलती चिक–चिक–चिक।
घंटी बजती टुन–टुन–टुन,
गुड़िया नाचे छुन–छुन–छुन।
घोड़ा भागे टप–टप–टप,
पानी बरसे छप–छप–छप।
चिड़िया करती चूं–चूं–चूं,
मुन्नी रोती ऊँ–ऊँ–ऊँ।।

PM Publishers. Pvt. Ltd.

सच्चाई नहीं छिपानी चाहिए

किसी गाँव में एक निर्धन धोबी रहता था। उसके पास एक गधा था। गधा काफी कमजोर था क्योकि उसे बहुत कम खाने–पीने को मिल पाता था।

एक दिन, धोबी को एक मरा हुआ बाघ मिला। उसने सोचा, ''मैं अपने गधे के ऊपर इस बाघ की खाल को डाल दूँगा और उसे पड़ोसियों के खेतों में चरने के लिए छोड़ दिया करूँगा। किसान समझेंगे कि वह सचमुच का बाघ है और उससे डरकर वे दूर रहेंगे और गधा आराम से खेत चर लिया करेगा।''

धोबी ने तुरंत अपनी योजना पर अमल कर डाला। उसकी योजना काम कर गई।

एक रात, गधा खेत में चर रहा था कि उसे किसी गधी की रेंकने की आवाज सुनाई दी। उस आवाज को सुनकर वह इतने जोश में आ गया कि वह भी ज़ोर–ज़ोर से रेंकने लगा।

गधे की आवाज सुनकर किसानों को उसकी असलियत का पता लग गया और उन्होंने गधे की खूब पिटाई की।

इसलिए कहा गया है कि अपनी सच्चाई नहीं छिपानी चाहिए।

क्रिया कलाप-2

बौनी जोकर और उसका कुत्ता दोनों क्लॉक-टावर तक पहुँचना चाहते हैं । साथ ही स्कूली बच्चे झूले तक पहुँचना चाहते हैं । अब आप सही रास्ता बताएं ।

PM Publishers. Pvt. Ltd.

मोर–मोरनी

नभ में बादल छाए हैं,
मोर–मोरनी आए हैं।
रंग–बिरंगे पंख हैं इनके,
देखके हम ललचाए हैं।
इनके ठाठ निराले हैं,
जैसे ये मतवाले हैं।
मोर जब नाच दिखाएगा,
अपने पंख फैलाएगा।।

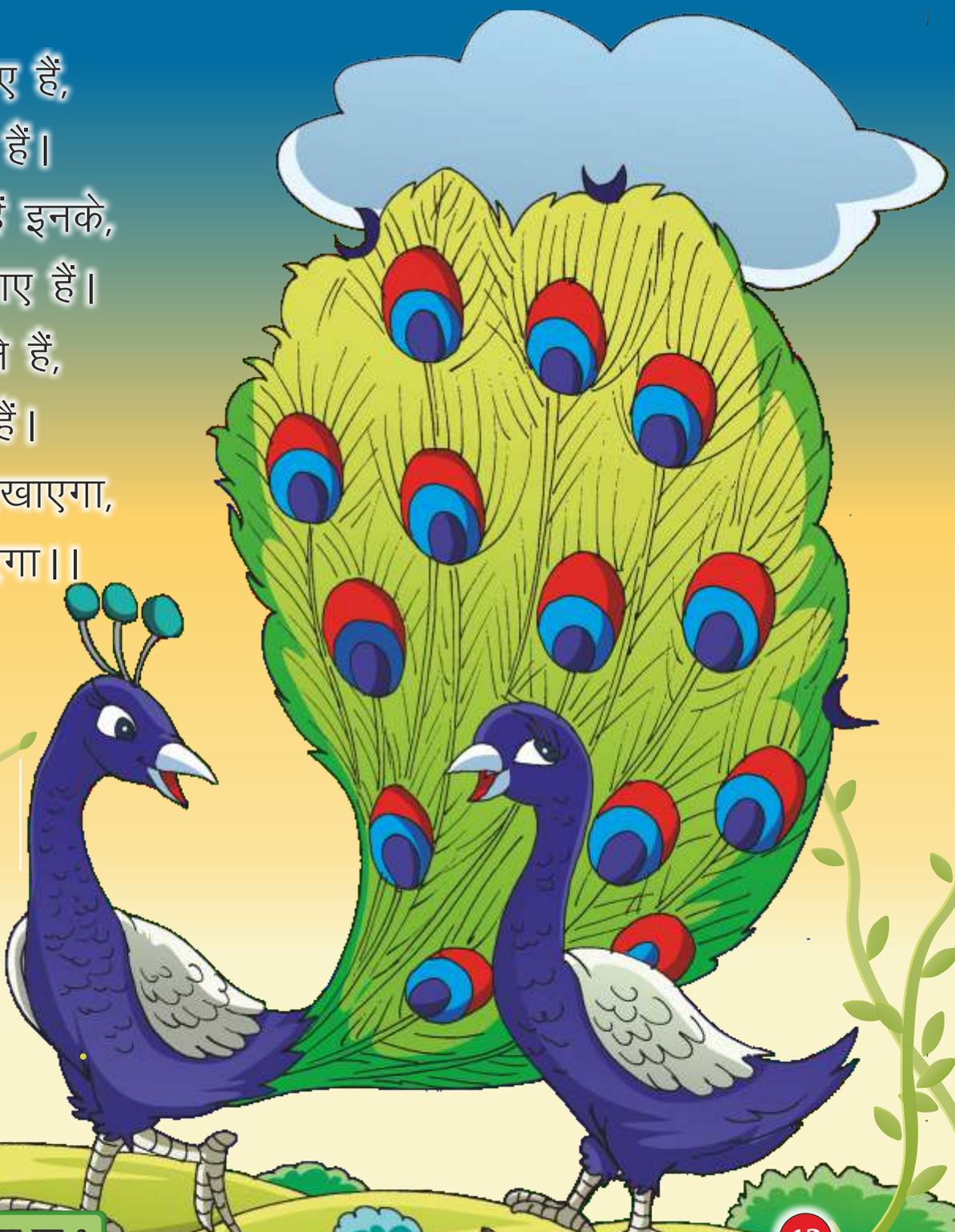

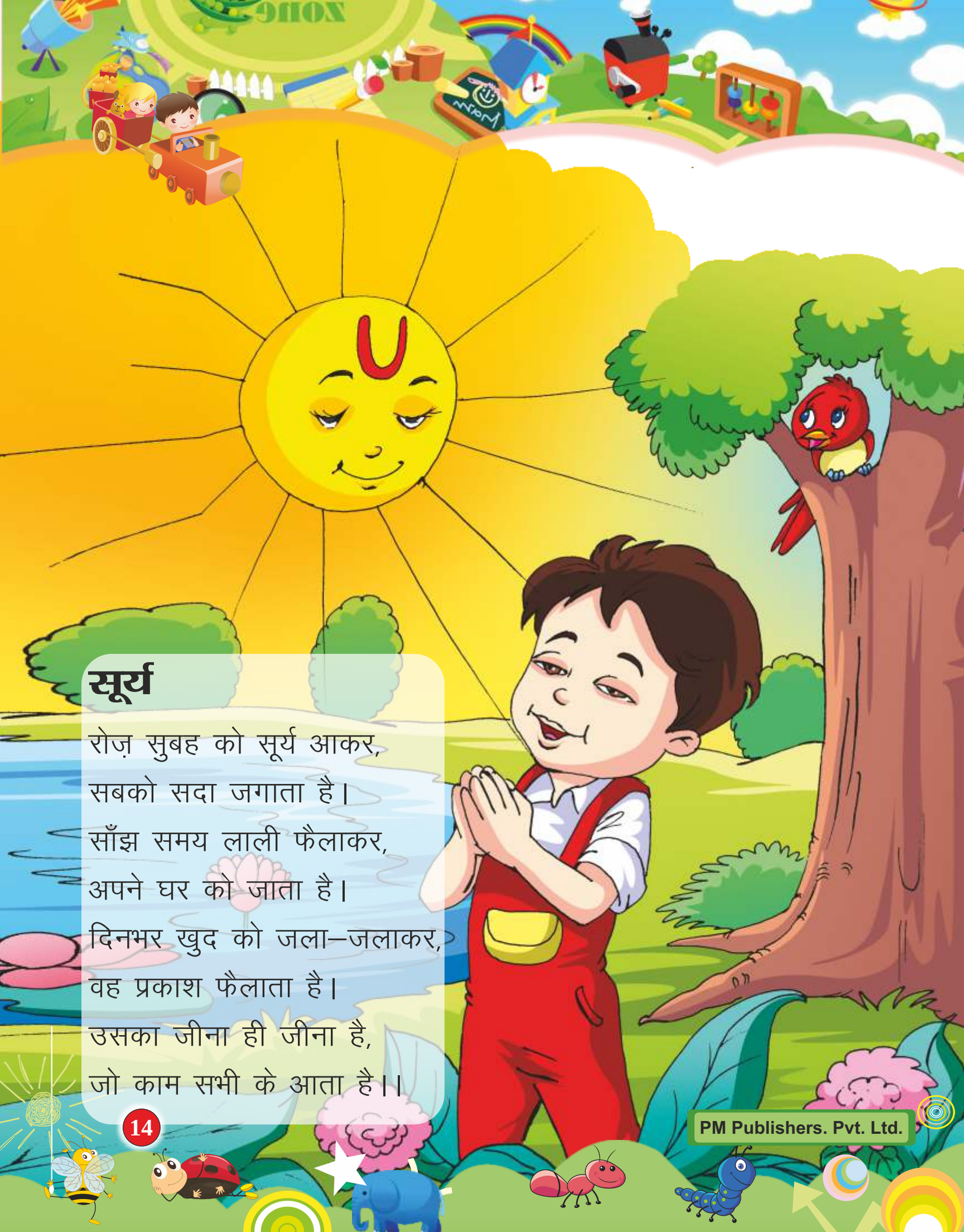

सूर्य

रोज़ सुबह को सूर्य आकर,
सबको सदा जगाता है।
साँझ समय लाली फैलाकर,
अपने घर को जाता है।
दिनभर खुद को जला–जलाकर,
वह प्रकाश फैलाता है।
उसका जीना ही जीना है,
जो काम सभी के आता है।।

PM Publishers. Pvt. Ltd.

तोता आया

तोता आया, तोता आया,
फ्रॉक पहन कर तोता आया।
सिर पर टोपी पाँव में जूता,
ऐनक एक लगा कर आया।
देख के तोता गद् गद् हो गई,
छोटी पिंकी रानी।
मार ठहाका लगी वह हँसने,
बस इतनी–सी है कहानी।।

मूर्ख कछुआ

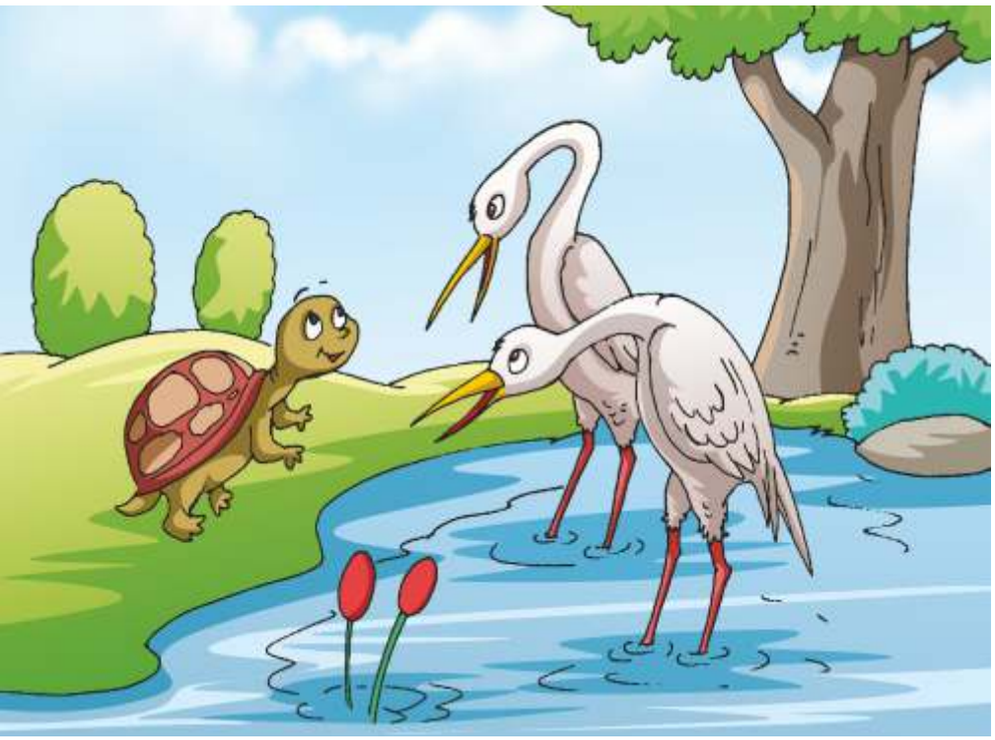

बहुत समय पहले की बात है। किसी गाँव के एक तालाब में एक कछुआ रहता था। उसकी मित्रता दो बगुलों से थी। तीनों दोस्त एक साथ खूब मज़ा किया करते थे।

एक बार गाँव में सूखा पड़ा। नदी व तालाब सूखने लगे, खेत मुरझा गए। आदमी व पशु–पक्षी सब प्यास से मरने लगे । वह सब अपनी जान बचाने के लिए गाँव छोड़कर दूसरे स्थानों पर जाने लगे।

बगुलों ने भी अन्य पक्षियों के साथ दूसरी जगह जाने का फैसला लिया। जाने से पूर्व वह अपने मित्र कछुए से मिलने गए। उनके जाने की बात सुनकर कछुए ने उनसे उसे भी अपने साथ ले चलने के लिए कहा। इस पर बगुलों ने कहा कि वह भी उसे वहाँ छोड़कर नहीं जाना चाहते, परंतु मुश्किल यह है कि कछुआ उड़ नहीं सकता और वह उड़कर कहीं भी जा सकते हैं।

उनकी बात सुनकर कछुआ बोला कि यह सच है कि वह उड़ नहीं सकता। परंतु उसके पास इस समस्या का हल है। कछुए की बात सुनकर बगुलों ने उससे तरीका पूछा।

कछुआ बोला, ''तुम एक मजबूत डंडी ले आओ। उस डंडी के दोनों कोनों को तुम अपनी–अपनी चोंच से पकड़ लेना और मैं उस डंडी को बीच में से पकड़कर लटक जाऊँगा। इस प्रकार मैं भी तुम्हारे साथ जा सकूँगा और हम अपनी जान बचा सकेंगे।''

बगुलों को कछुए की बात पंसद आ गई और वह वहाँ से चलने की तैयारी करने लगे। चलने से पहले बगुलों ने कछुए को सावधान किया कि वह उसे साथ ले तो जा रहे हैं परंतु उनकी एक शर्त है कि वह सारे रास्ते अपना मुँह नहीं खोलोगे। कछुए को बहुत बात करने की आदत थी। उसके लिए चुप रहना बहुत मुश्किल कार्य था। बगुले कछुए से आगे बोले, ''यदि तुमने गलती से भी मुँह खोला तो तुम नीचे गिरकर मर जाओगे।''

इस पर कछुआ बोला, '' मैं कभी भी ऐसी मूर्खता नहीं करूंगा।''

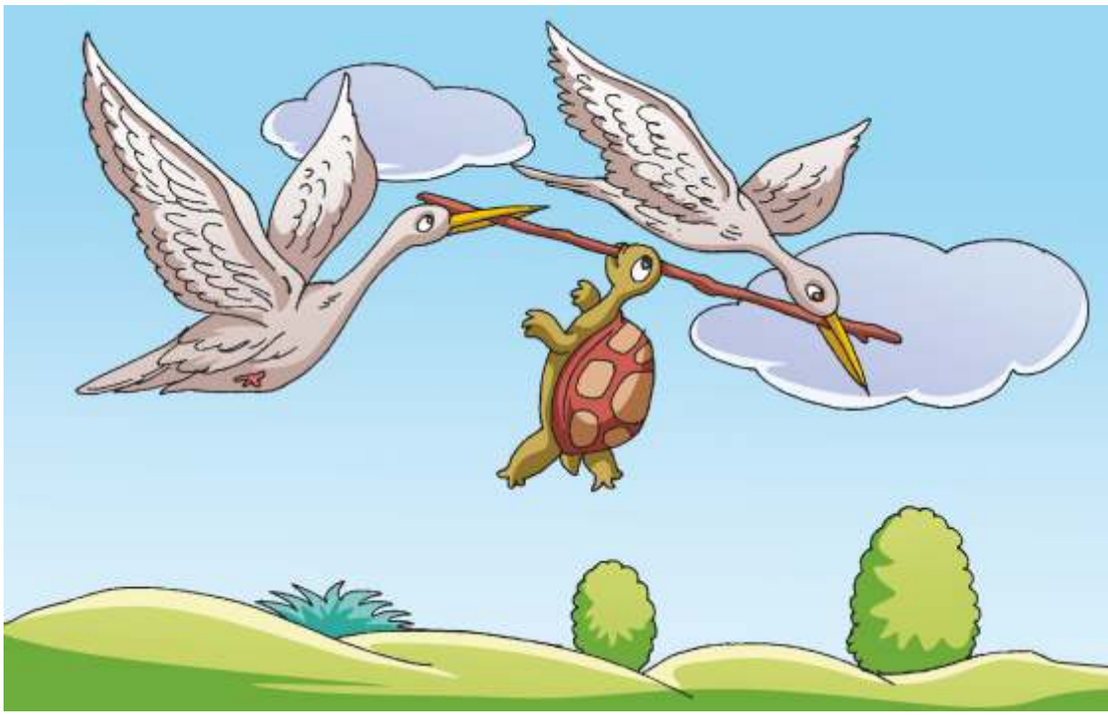

बगुलों ने डंडी के दोनों किनारों को अपनी–अपनी चोंच में दबा लिया। कछुआ डंडी को अपने मुँह से पकड़ कर बीच में लटक गया और बगुले उसे लेकर उड़ने लगे।

वह तीनों आकाश में ऊँचे उड़ते गए। काफी समय तक उड़ने के बाद वह एक नगर के ऊपर से निकल रहे थे तो उन्हें देखने के लिए सड़कों पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। किसी ने भी ऐसा नज़ारा पहले कभी नहीं देखा था। सभी लोग ज़ोर–ज़ोर से ताली बजाने और शोर मचाने लगे।

लोगों को इस तरह से शोर मचाते व ताली बजाते देख कछुए को बहुत क्रोध आया। उससे बिना बोले नहीं रहा गया। वह बगुलों द्वारा चुप रहने की बात भूल गया और जैसे ही कछुए ने बोलने के लिए मुँह खोला, वह धड़ाम से नीचे जा गिरा और मर गया।

क्रिया कलाप-3

नीचे दिए गए दोनों चित्रों को देखकर अंतर बताएँ ।

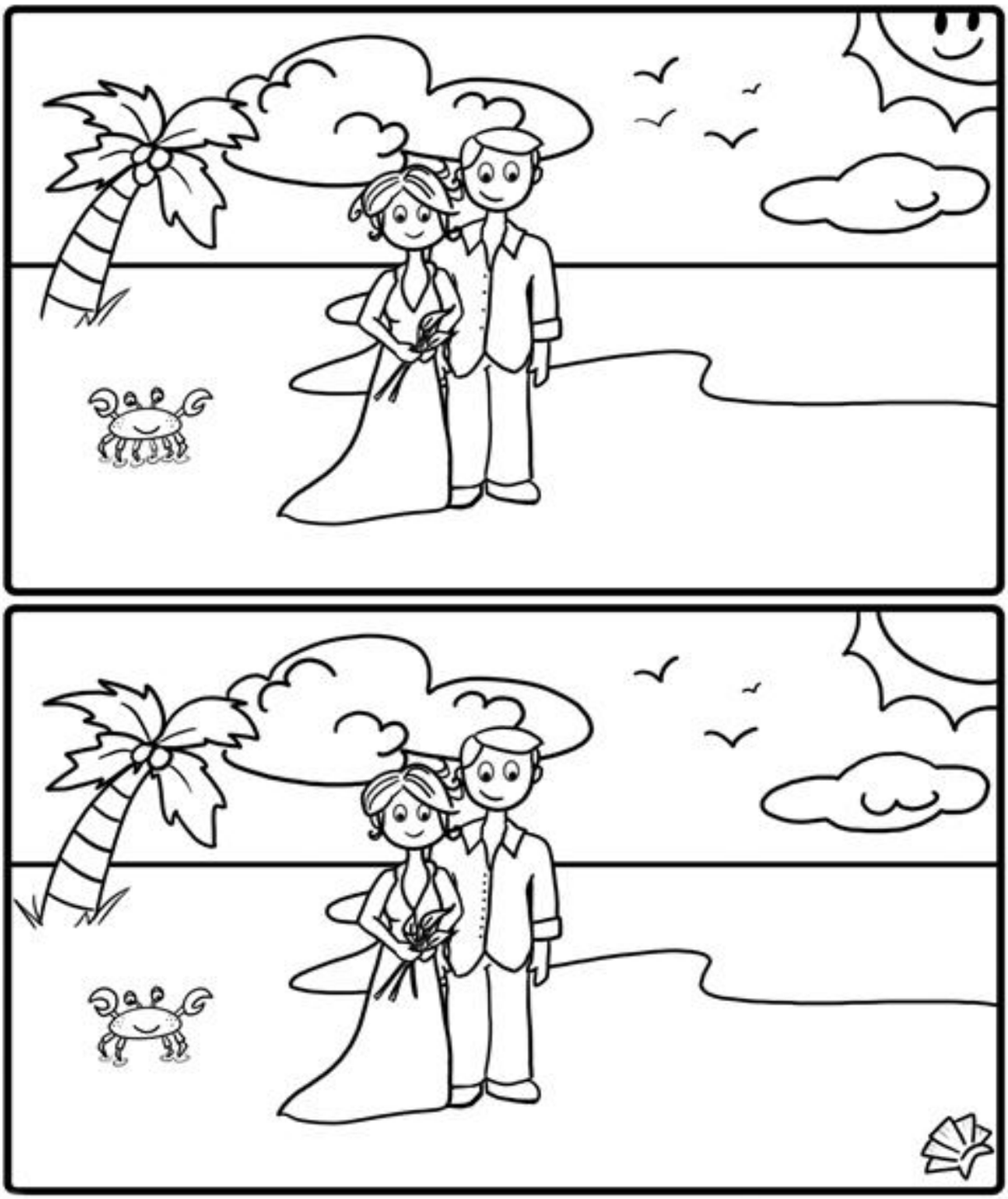

मैं तो सो रही थी

मैं तो सो रही थी–मैं तो सो रही थी,
मुझे मुर्गे ने जगाया बोला कुकड़ूँकूँ–कुकड़ूँकूँ।
मैं तो सो रही थी–मैं तो सो रही थी,
मुझे कुत्ते ने जगाया बोला भौं–भौं–भौं।
मैं तो सो रही थी–मैं तो सो रही थी,
मुझे भैया ने जगाया बोला हँस–हँस–हँस।
मैं तो सो रही थी–मैं तो सो रही थी,
मुझे मम्मी ने जगाया बोली उठ–उठ–उठ।

नन्हीं–सी मुन्नी

नन्हीं–सी मुन्नी खाए खूब चीनी,
दाँत में लग गया कीड़ा,
हुई बहुत ही पीड़ा।
डॉक्टर के जाना पड़ा,
दाँत निकलवाना पड़ा।
अधिक चीनी मत खाना,
अच्छे बच्चे बन जाना।।

PM Publishers. Pvt. Ltd.

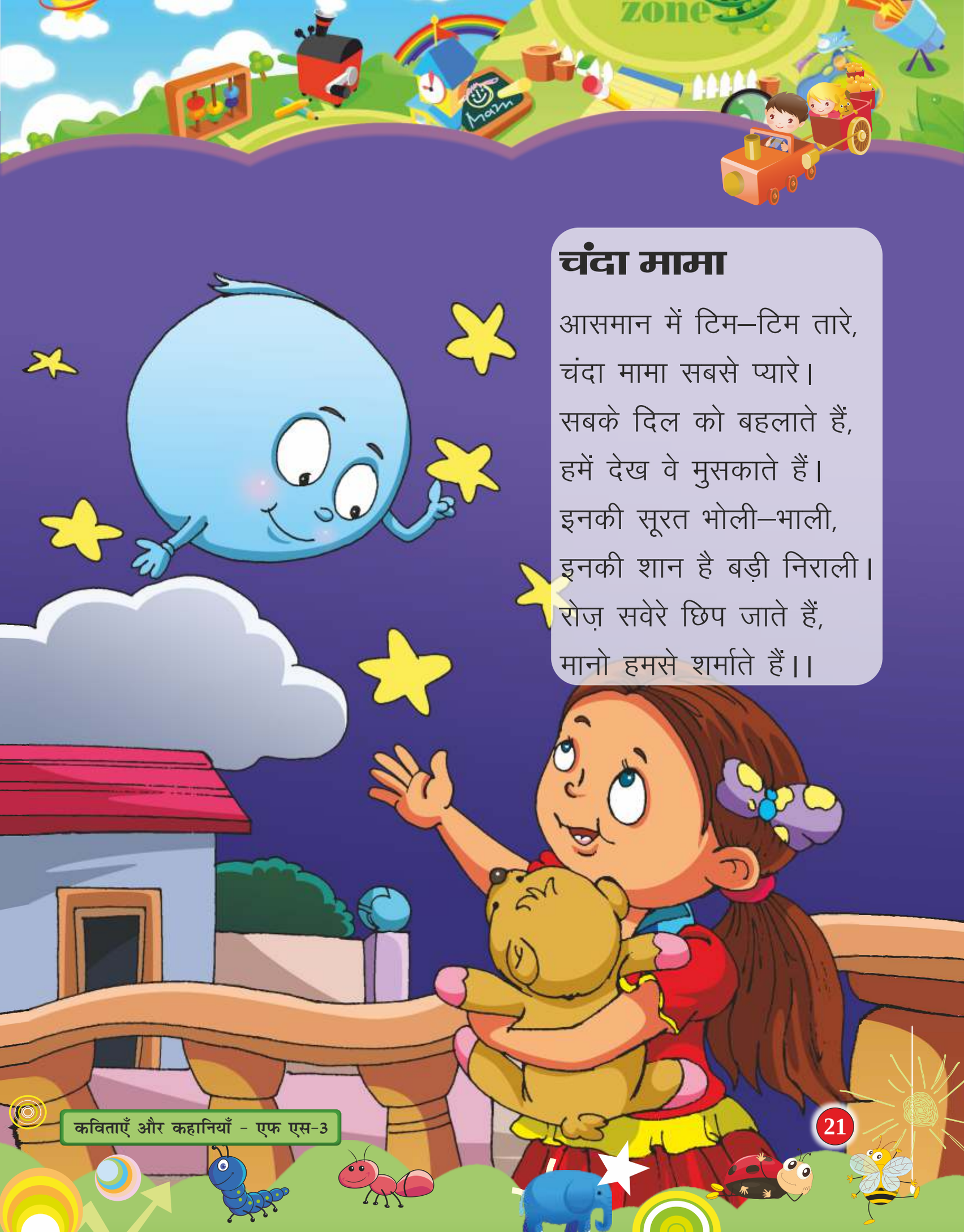

चंदा मामा

आसमान में टिम–टिम तारे,
चंदा मामा सबसे प्यारे।
सबके दिल को बहलाते हैं,
हमें देख वे मुसकाते हैं।
इनकी सूरत भोली–भाली,
इनकी शान है बड़ी निराली।
रोज़ सवेरे छिप जाते हैं,
मानो हमसे शर्माते हैं।।

चालाक गीदड़

एक भूखा शेर शिकार की खोज में जंगल में घूम रहा था। घूमते–घूमते वो थक गया। उसकी भूख भी बढ़ गई। अकस्मात् उसे एक गुफा नज़र आई। शेर ने सोचा कि इस गुफा में ज़रूर कोई जानवर रहता होगा। "अच्छा हो मैं उस झाड़ी में छिप जाऊँ और ज्यों ही वह निकलेगा मैं उसे धर दबोचूँगा।"

शेर ने काफी देर तक गुफा के बाहर इंतज़ार किया, मगर कोई भी जानवर वहाँ से बाहर नहीं आया। तब शेर ने सोचा कि लगता है वह जानवर इस वक्त गुफा में ना होकर कहीं बाहर गया है। इसलिए उसे गुफा के अन्दर जाकर उसका इंतज़ार करना चाहिए। जैसे ही वह गुफा के अन्दर आएगा वह उसे खा जाएगा।

ऐसा सोचकर शेर गुफा के अन्दर जाकर छिप गया।

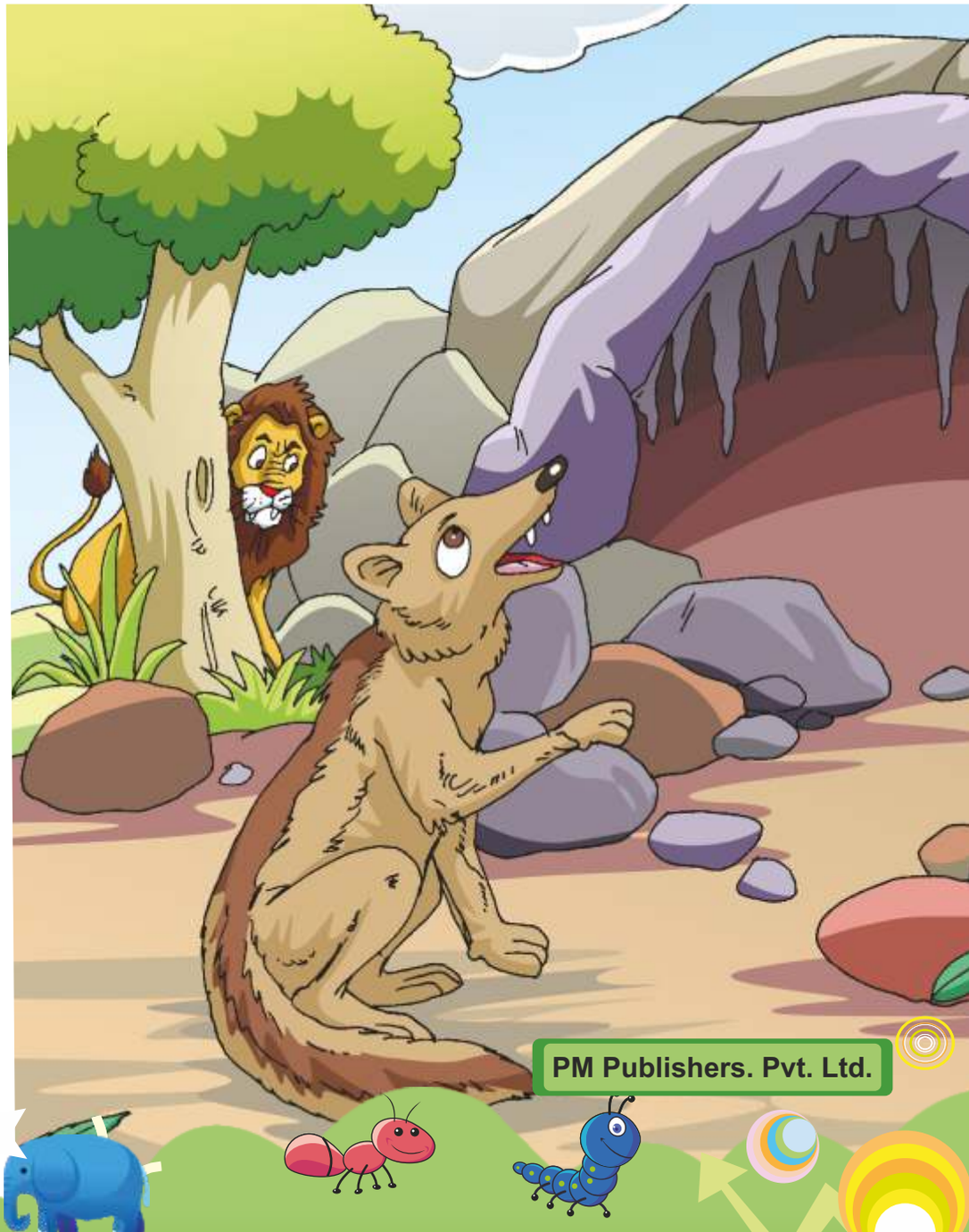

PM Publishers. Pvt. Ltd.

उस गुफा में एक गीदड़ रहता था। थोड़ी देर बाद वह वापस आया तो उसे गुफा के बाहर किसी के पैरों के निशान दिखाई दिए। उसे यह निशान किसी बड़े एवं खतरनाक जानवर के प्रतीत हुए। उसे किसी खतरे का एहसास हुआ।

गीदड़ बहुत चालाक और सयाना था। उसने सोचा कि गुफा में जाने से पहले देखें मामला क्या है। उसने ज़ोर से गुफा को आवाज़ लगाई– "गुफा! ओ गुफा!" लेकिन जवाब कौन देता? गीदड़ ने फिर आवाज़ लगाई, "अरे मेरी गुफा, तू जवाब क्यों नहीं देती? आज तुझे क्या हो गया? हमेशा मेरे लौटने पर तू मेरा स्वागत करती है। आज क्या हो गया? अगर तूने जवाब न दिया तो मैं किसी दूसरी गुफा में चला जाऊँगा।"

गीदड़ की बात सुनकर शेर ने सोचा "यह गुफा तो बोलकर गीदड़ का स्वागत करती है। आज मेरे यहाँ होने की वजह से शायद डर गई है। अगर गीदड़ का स्वागत नहीं किया तो वह चला जाएगा।"

ऐसा विचार कर शेर अपनी भारी आवाज़ में जोर से बोला– "आओ, आओ मेरे दोस्त, तुम्हारा स्वागत है।"

शेर की आवाज़ सुनकर गीदड़ वहाँ से भाग गया।

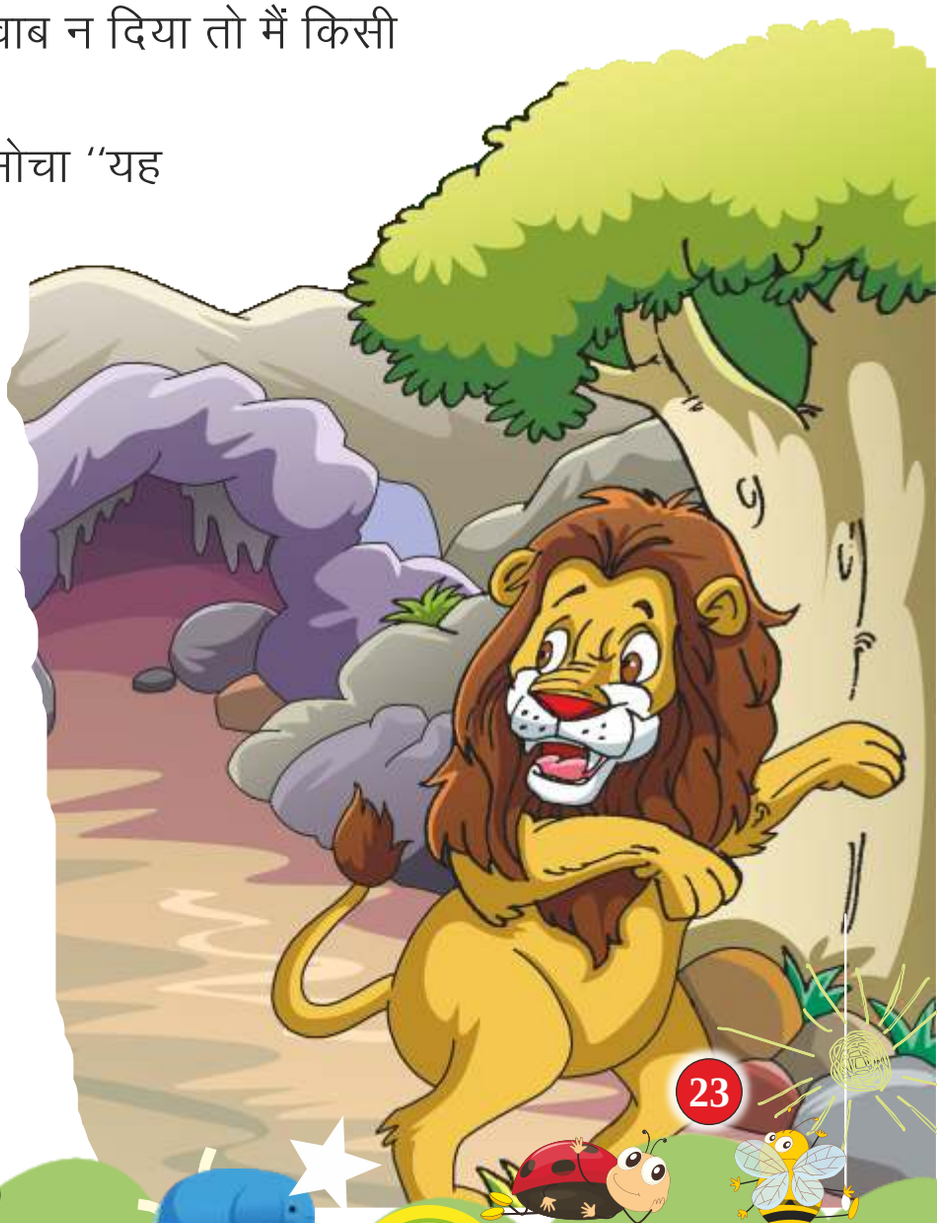

क्रिया कलाप-4

रंग भरें और बताएँ कि कहाँ से निकला जिन्न?

PM Publishers. Pvt. Ltd.